

भण्डाफोड से उजागर गलतियाँ

आज जब देश के सारे पत्रों में यही समाचार उछाला जा रहा है, कि क्या श्री रावने हर्षद मेहता से एक करोड़ रुपये लिये, या कैसे लिये या नहीं लिये, तो आईये जरा उन गलतियों को गिनने का प्रयास भी करें, जो इस काण्ड में श्री राव ने की हैं, और हमने की हैं। पहले कुछ देर हम या मानकर चलते हैं कि अपने अफेडेविट में एक करोड़ की घटना के विषय में हर्षद मेहता ने जो कुछ कहा हैं, वह सारा सच है। बाद में दूसरी चर्चा हम यह मानकर करेंगे कि हर्षद ने गलत ब्यौरा दिया है।

श्री राव की पहली गलती है चुनाव लड़ने के लिये इतना बड़ा बजेट बनाने की। माना कि आज चुनाव लड़ने के लिये हर किसी को पैसे की जुगत भिडानी पड़ती हैं, माना कि अमरीका जैसे प्रगत और जागरूक देश के चुनावी उम्मीदवार भी इससे नहीं बच पाये हैं, फिर भी देश के कानून के मुताबिक और देश के लिये आवश्यक स्वच्छ प्रशासन को नजर में रखते हुए यह कहना पड़ेगा कि जो भी चुनावी उम्मीदवार चुनाव लड़ने के लिए इतनी बड़ी रकम लागत पर लगाने बात को स्वीकार करता है, उससे आप भ्रष्ट प्रशासन की ही अपेक्षा कर सकते हैं, स्वच्छ प्रशासन की नहीं। और हम सारे बुद्धिजीवी जो हर चुनाव में बढ़ोतरी होने वाली चुनावी लागत को देख रहे हैं, और स्वीकार कर रहे हैं कि, "हाँ आखिर उम्मीदवार भी बिचारा क्या करें?" वो हम सारे भी उस भ्रष्टाचार की जिम्मेदारी और दुष्परिणामों को ढो रहे हैं और ढोते रहेंगे। फिर भी हममें और उम्मीदवार में एक फर्क अवश्य रहेगा। हमने जो गलती हताशा में और अकर्मण्यता के कारण स्वीकार की है और जिसका दुष्परिणाम भी हमें ही भुगतना है, वह गलती चुनावी उम्मीदवार अपनी मर्जी से करता है, और उस धन व सत्ता के लिये करता है जो कई बार उसे मिल भी जाते हैं। इसे करने में जो बेईमानी हैं, वह उम्मीदवार की ही हैं। और यदि सौ उम्मीदवार यह गलती करते हैं और नहीं पकड़े जाते, तो इससे उस एक उम्मीदवार की गलती नहीं छिप जाती जो पकड़ा जाये। उसकी और बाकी न पकड़े जाने वाले उम्मीदवारों की गलती के प्रति यदि हम और आप आवाज नहीं उठाते तो इसका अर्थ है कि हमें वह दुर्भाग्य और दुरवस्था मंजूर है, जिसे हम अपनी इस अकर्मण्यता के द्वारा आमंत्रण दे रहे हैं। अगर श्री राव ने भ्रष्ट आचरण की गलती की है, तो हमने भी गलती है अकर्मण्यता की। और हमारी गलती उनकी गलती से कई गुना अधिक गंभीर है।

अगर हम मान लें कि हर्षद मेहता ने जो कुछ कहा है, वह सच कहा है, तो कई और गलतियाँ उजागर हो जाती हैं। एक खतरनाक गलती सुरक्षा से संबंधित है। अगर हर्षद का कहना सच है तो यह मानना पड़ेगा कि, हर्षद जिन सुटकेसों को लेकर श्री राव से मिलने गया उन सुटकेसों की जाँच किसी भी सुरक्षाकर्मी ने नहीं की। साथ ही हर्षद का यह कहना है कि, उसने राव के साथ और श्री खांडेकर के साथ हुए वार्तालाप को टेप भी किया है और टेप भी उसके पास उपलब्ध है। प्रश्न यह उठता है की सुरक्षाकर्मियों ने उसे इस प्रकार टेपरेकॉर्डर अंदर किस प्रकार ले जाने दिया। अगर उसका कहना सही है तो आप अंदाजा लगा सकते हैं की सुरक्षाकर्मियों का काम कितना ढीला पड़ गया है या पड़ सकता है। भविष्य में कोई भी धनी व्यक्ति पैसे भरा सूटकेस देने के बहाने रिवॉल्वर ले आ सकता है और कुछ भी हो सकता है।

कई लेखकों के विश्लेषण में यह तर्क आया कि जब हर्षद ने श्री राव को पैसे दिये उस समय बैंक के प्रतिभूतियों के घोटाले नहीं शुरू हुए थे। इसलिये यह मानना गलत है कि इस प्रतिभूति के घोटाले के लेखक या कर्ताधर्ता भी श्री राव ही हैं। या यह मानना भी गलत है कि हर्षद मेहता ने यह पैसे राव को उन प्रतिभूति घोटालों को ठंडा करने के लिये दिये थे। लेकिन इस मुद्दे की चर्चा बाद में करेंगे। गौर करने की

बात हैं कि, अगर श्री राव ने हर्षद से एक करोड़ रुपये लिये या उन्हें बताया गया कि, उन्हें हर्षद से एक करोड़ रुपये मिलने वाले हैं, तो उनके दिमाग में सबसे पहले यह प्रश्न उठना चाहिए कि, हर्षद मुझे यह पैसे किस लिये दे रहा हैं? और बदले में मुझसे क्या लेने वाला है। और कितना लेनेवाला है। हर्षद कहता है, और चाहता है कि हम मान लें कि यह महज एक चुनावी डोनेशन था। लेकिन जरा अपने अपने शब्दकोष पलट कर देखिए कि "महज चुनावी डोनेशन" इन शब्दों का अर्थ क्या निकलता है? इसका अर्थ यह नहीं है कि उसने यह रुपये उठाए, दे दिये और दामन झटक कर अलग हो गया। वह जानता था और राव भी जानते थे इस एक करोड़ का मूल्य कई गुना बढ़ा चढ़ा कर ही वसूल किया जाएगा और मान रहा था कि राव को उसमें कोई आपत्ति भी नहीं होगी। यदी राव इसे गलती नहीं मानते और यदि हम और आप इसे गलत मानते हैं तो इसे सुधारने का उपाय भी हमें ही करना है।

हर्षद का कहना है कि, इसका परिचय बम्बई के दो जगमगाते सितारों के रूप में कराया गया और तीन मिनटों में उसने और उसके भाई अश्विन मेहता ने श्री राव को समझाया कि इस देश की एकॉनॉमी को आगे ले जाने का, प्रगति के रास्ते पर, विकास के रास्ते पर ले जाने का वही आसान तरीका हो सकता है, जो वह अपना रहा है या अपनाने वाला है। यदी हम मान लें कि श्री राव ने उन तीन मिनटों की बात को अच्छी तरह से सुन लिया और स्वीकार भी कर लिया, तो यह सबसे बड़ी गलती मानी जानी चाहिए। बल्कि सच तो यह है कि, भले ही श्री राव ने यह गलती की हो या न की हो पर हम यह गलती कर रहे हैं, कि हम हर्षद को एक बड़ा व्यापारी मान रहे हैं, ईमानदार मान रहे हैं और जब वह यह प्रश्न उठाता है की क्या इस देश में उसे अपने मनपसंद रोजगार करने का हक नहीं है, तो हम भी अपना सिर हिला कर कहते हैं "हाँ भाई हाँ, हक तो उसे होना ही चाहिए।" हाँलाकि कुछ अखबारों ने हर्षद के इस बयान का समर्थन नहीं किया है, फिर भी ऐसा लगता है कि सामान्य आदमी की सहानुभूति इस प्रश्न को सुनने के बाद हर्षद के साथ हो गई है। जब देश में करोड़ों से अधिक बेरोजगार पड़े हुए हैं, और 30 - 40 करोड़ से अधिक लोग पर्याप्त काम न होने से आधे पेट जिंदगी गुजार रहे हैं तो जो भी आदमी रोजगार के हक की दुहाई देगा, जनता उसके साथ सहानुभूति दिखाएगी।

इसलिए इस बात की जाँच परख करना आवश्यक हो जाता है की, जिसे हर्षद अपना व्यापार, अपना पेट पालने का धंधा कहता है। वह क्या इस वर्णन के पात्र है। इसके लिए हमें यह बड़े साफ गोई के साथ समझना पड़ेगा कि, व्यापार या रोजगार ऐसी चीज है, ऐसी बात है जो पूर्णतया आपकी उत्पादन क्षमता पर निर्भर करती है। अगर आप किसी चीज की पैदावार नहीं कर रहे हैं, या अगर आपका व्यापार किसी बात के पैदावार को बढ़ावा देने के लिये नहीं है तो इसे एक इमानदार व्यापार या इमानदार रोजगार नहीं कहा जा सकता। बल्कि इसे रोजगार ही नहीं कहा जा सकता। यह सरासर लूट है, डकैती है और हर्षद इसे कर रहा है और सवाल हम से पूछ रहा है, इस देश की जनता से पूछ रहा है कि क्या इस देश में उसे रोटी का हक नहीं है? क्या इस देश में उसे रोजगार करने का हक नहीं है? भई, रोजगार करने का हक तो था, अगर तुम्हें रोजगार करना होता। हर सामान्य आदमी इस बात को जानता है कि, इस देश में ऐसा कोई रोजगार, ऐसा कोई व्यापार, ऐसा कोई पैदावार, ऐसी कोई इंडस्ट्री, अभी तक नहीं पैदा हुई जिसमें एक आदमी चार या छः वर्षों में ही इतने पैसे कमा ले कि उसके पास बैंक के सेविंग अकाउंट में इकट्ठे निकालने के लिये 80 लाख रुपये से भी ज्यादा रुपये पड़े रहते हैं। जरा सोचिए, एक परफ तो सामान्य आदमी है जो अगर बैंक में 1000 रुपये जमा हो जाते हैं तो सोचता है कि, चलो इसकी FDR बना ली जाए। दूसरी तरफ हर्षद मेहता जैसा आदमी है जो अपने आदमी को बैंक में दो चैको के साथ भेजता है। इसमें से एक चैक है 80 लाख का और दूसरा चैक है कोरा कि चाहे उसमें जो रकम लिखवा लो। इसके अलावा हर्षद के घर में 15 लाख रुपये ऐसे ही फालतू पड़े थे। और वो भी वह दिल्ली ले जा सका। इसके अलावा उसके उसके दूसरे बैंक के

सेव्हिंग में पैसे यूही पड़े हुये थे और उसमें से उसने तीस लाख रुपये निकाले। फिर वह जाता है दिल्ली वहाँ भी यूही सेव्हिंग बैंक में उसके पैसे पड़े हुये हैं, वहाँ से वह निकालता है 45 लाख। इन आकड़ों को देखिए और बताइये अपने दिमाग पर हाथ रखकर और दिल पर हाथ रखकर कि इस देश में ऐसा कौन सा इमानदार व्यापार है, जो आप और हम जानते हैं, जिसको करने से इतने पैसे मिलते हो कि, आप अपने घर में इतनी कैश इकट्ठी रखे और आप अपनी बैंक कि सेव्हिंग अकाउंट में इतनी कैश इकट्ठी पड़ी रहने दें। अगर हर्षद का यह कहना सच है कि, वह श्री नरसिंह राव से मिला, उसने श्री राव को एक करोड़ रुपये दिये और श्री नरसिंह राव ने उसकी बातें आनंदपूर्वक सुन ली और उससे कहा कि, आप आइए, और दोबारा मुलाकात किजिए। हम अपने अर्थमंत्री से आपको मिलवायेंगे इत्यादि तो इस पूरे काण्ड में मेरी निगाह में श्री राव की सबसे बड़ी गलती यह नहीं है की, उन्होंने एक करोड़ रुपये लिये। यह भी नहीं है कि उन्होंने हर्षद जैसे आदमी को मिलने के लिए मौका दिया। उनकी सबसे बड़ी गलती यह थी, कि जब हर्षद ने उनसे कहा की कैसे कम ही समय में पैसे बनाये जाते हैं तो उसी समय श्री राव की समझ में आना चाहिए था कि यह इमानदारी के रास्ते की बात नहीं कर रहा। अगर हमारे देश का प्रधानमंत्री इस बात को नहीं समझ सकता है तो हमारी राजनीति, हमारी अर्थव्यवस्था और हमारा समाज अवश्यमेव डूबेगा। हम आज श्री रीव के प्रति सहानुभूति रखे या न रखे यह बात अलाहिदा है। लेकिन हमें यह अच्छी तरह से समझना चाहिए कि इस पूरे काण्ड में अगर उनसे कई गलतियाँ हुई हैं तो सबसे बड़ी गलती कहा हुई। अगर इस गलती को हम गलती नहीं कहेंगे तो हम भी अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकते और यदि कुछ आशा इस देश के बचने की है तो वह इसी बात पर निर्भर करती हैं, कि हम में से कितने व्यक्ति इस गलती को गलती कहकर पहचान सकते हैं।

दिनांक : 29-06-2005

पता :

लीना मेंहेंदले,

'भाई' बंगला,

50, लोकमान्य नगर,

पौड रोड, कोथरुड,

पुणे 411038.
